

कब मिलेगा छुटकारा ?

प्रायः दृष्टिगोचर होता है कि मनुष्य परिस्थिति, समस्याओं, व्यक्तियों या स्थान से परेशान होकर छूटने या भागने का प्रयास करते हैं। वे कई बार स्वयं से या दूसरों से यह कहते पाए जाते हैं कि मैं अमुक बात से तंग आ गया हूँ। परेशान हो गया हूँ अथवा 'बोर' हो गया हूँ। वे यह भी कहते हैं कि आज-कल जीने में मजा नहीं है, कुछ अच्छा नहीं लगता, यहाँ से कहीं दूर जाने की तमन्ना है, मैं किसी से मिलना नहीं चाहता, किसी को देखना नहीं चाहता आदि। इस प्रकार के बोल व्यक्ति की असंयत एवं विचलित मनः स्थिति को अभिव्यक्त करते हैं। वैसे तो आज का दौर ही भागम-भाग, आपा-धापी, समस्याओं और प्रतिस्पर्धाओं से भरा हुआ है, जिसमें हर व्यक्ति को अस्तित्व के लिए संघर्ष करना है। और इस संघर्ष में घर, समाज, परिवार या निजी समस्याओं से हार कर लोग पलायन करना चाहते हैं अथवा छूटना चाहते हैं।

भगवान, ईष्टों, साधू और संतों के पास जाकर भी लोग यही गुहार करते हैं, कि मुझे अमुक दुःख या समस्या से छुटकारा कब मिलेगा? कई तो इस संसार को ही भवसागर या जंजाल कहते हुए इससे शीघ्र मुक्ति पाने हेतु बार-बार पुकार करते रहते हैं। परन्तु छूटना इतना आसान नहीं है और यथार्थ से पलायन पुरूषार्थ की पहचान नहीं है भागने में कोई वीरता नहीं भी नहीं है। और वस्तुतः हो तो यही है कि आप एक समस्या से भागने में तो सफल हो जाते हैं, परन्तु दूसरे अन्य परिस्थितियां तत्काल आपको जकड़ लेती है, इसलिए हमें छूटने व भागने की वृत्ति छोड़कर, सामजस्य और समाधान की वृत्ति अपनाना चाहिए।

स्वयं से भागना - कई बार व्यक्ति तन की बीमारी, मन की चिन्ता, धन की कमी, दूसरों की अपेक्षा और अपमान आदि कारणों से परेशान होकर, स्वयं से भागने का प्रयास करता है। समय पर सही मार्गदर्शन और सदबुद्धि न मिलने के कारण कई बार ऐसे लोग विवेक शून्य हो जाते हैं। वे सही निर्णय नहीं ले पाते। और कोई रास्ता न मिलने के कारण वे आत्म हत्या आदि जैसे छुद्र प्रयास भी कर बैठते हैं।

कर्तव्यो से पलायन- समाज में हर व्यक्ति को परिवार, कर्मक्षेत्र, रोजगार तथा व्यापार, न्याय और धर्म, शासन व प्रशासन आदि को ईन कोई जिम्मेवारी मिली हुई है। जिम्मेदारी और कर्तव्यों का ईमानदारी और निष्ठापूर्वक निर्वाहन करना हर व्यक्ति का लक्ष्य होना चाहिए। परन्तु मार्ग के आने वाले रोडों समस्याओं और आलोचनाओं से घबराकर लोग कर्तव्य विमुख हो जाते हैं। या जिम्मेदारी को अधर में ही छोड़ देते हैं। और कई उसे बेबसी और अन्य मनस्यकता यूं ही धकीयाते रहते हैं बार-बार वे छुटकारा पाने को उपक्रम रचते हैं। न छूट पाने पर घूटन महसूस करते हैं यह श्रेष्ठ पुरुषार्थ की मनोदशा कदापि नहीं हो सकती।

जन्मों से मुक्ति की चाह- संसार के नानाप्रकार की समस्याओं, दुखों और कष्टों को देखकर या समाज में हो रहे नैतिक पतन को देखकर या दूसरों के दुख दर्द से घबराकर बहुत से लोग ईश्वर से यही प्रार्थना करते हैं कि संसार में मुझे फिर जन्म न लेना पड़े हमेशा के लिए मुक्ति मिल जाये। सन्यासी और साधू भी ऐसा ही सोचते हैं, परन्तु ये सभी लोग सृष्टि चक्र और विधी के विधान से सर्वथा अनभिज्ञ हैं क्योंकि जिसने भी शरीर धारण कर कर्म किया उसे भले ... बुरे कर्मों का फल भोगने के लिए इस संसार में फिर जन्म लेना ही पड़ेगा अतः मुक्ति अर्थ शरीर और जन्म के बन्धनों से मुक्ति कदापि नहीं है।

छूटना किससे चाहिए- उपरोक्त बातों को जानकर यह समझना आवश्यक है, कि मुक्ति का सही अर्थ क्या? वास्तव में हमें शरीर, कर्म, परिवार, समाज, जिम्मेवारियों या लोगों से पलायन नहीं करना है। छूटने या मुक्ति का सही अभिप्राय विकारों, दुर्व्यसनों और बुराईयों से छूटना है। आज हर मानव काम, क्रोध, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा आदि विषय विकारों से ग्रसित हैं। और वास्तव में उसकी दुख, अशान्ति और समस्याओं का कारण भी यही है न कि कोई व्यक्ति अथवा परिस्थिति, नशे और दुर्व्यसन में फैशन और भोग विलास में ईन्सान का तन, मन, धन सब कुछ छिन हो जाता है। दुर्व्यसन उसके पतन के जड़ हैं इसलिए वास्तव में छूटकारा पाना है तो दृढ प्रतिज्ञा द्वारा, विवेक द्वारा, त्याग और तप द्वारा, आत्मविश्लेषण द्वारा हम उपरोक्त विकारों और व्यसनों से छूटने या मुक्ति पाने का प्रयास करें। न कि यह संसार छोड़कर भागें। जो इन बुराईयों को छोड़ देता है, वह सदा संतुष्ट व सुखी बन जाता है उसके लिए कोई बुरा नहीं, कोई शत्रु नहीं, सब मित्र बन जाते हैं।

राजयोग से यर्थाथ मुक्ति - परमपिता परमात्मा ने गीता में मानव मात्र को मुक्ति और जीवन मुक्ति पाने का यथेष्ट उपाय परमात्मा की याद अथवा राजयोग बताया है, अतः हम कर्मयोगी बनकर अपनी जिम्मेवारियों का निर्वाहन भी करें। साथ ही पवित्र मन, बुद्धि से सर्व गुण और शक्तियों के स्रोत परमात्मा का सुमिरण भी करें। इस प्रकार **आध्यात्मिक शसक्तिकरण** द्वारा हमें दिव्य गुणों और मनोबल की प्राप्ति होगी। बुद्धि पवित्र और श्रेष्ठ बनेगी। एकाग्रता द्वारा हमारी परख क्षमता और निर्णय क्षमता भी बढ़ेगी। इस प्रकार हम किसी समस्या या संकट से घबरायेंगे या डेरेंगे नहीं, बल्कि उसका सामना करते हुए साम्जस्य और समाधान ढूँढ लेंगे।

अतः संसार से भागने के बदले, राजयोग अभ्यास द्वारा दुर्व्यसनों और बुराइयों से छूटने का पुरुषार्थ ही मुक्ति की यथेष्ठ विधि है।

वास्तव में छूटकारा पाना है तो दृढ प्रतिज्ञा द्वारा, विवेक द्वारा, त्याग और तप द्वारा, आत्मा विश्लेषण द्वारा हम विकारों और दुर्व्यसनों से छूटने या मुक्ति पाने का प्रयास करें। न कि यह संसार छोड़कर भागें।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com